Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 2 | (April - June 2026)

अलीपुरद्वार के वनवासी राभा समुदाय की बदलती हुई मानवता एवं व्यवहार में परिवर्तनः एक मानवशास्त्रीय अध्ययन

विवेक कुमार भगत [1], डॉ० मयंक प्रकाश [2]

[1] पी०एच०डी० शोधार्थी, स्नातकोत्तर मानवशास्त्र विभाग, डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची, झारखण्ड

[2] सहायक प्राध्यापक, स्नातकोत्तर मानवशास्त्र विभाग, कोल्हान विश्वविद्यालय, चाईबासा, झारखण्ड

संक्षेपिका

राभा उत्तरी पश्चिम बंगाल की एक अल्पज्ञात वनवासी जनजाति है, जो मुख्यतः अलीपुरद्वार और जलपाईगुड़ी जिलों के कुछ वन ग्रामों में निवास करती है। वन राभा समुदाय बोडो समूह से संबंधित है तथा उत्तर बंगाल में इन्हें 'कोच' के नाम से भी जाना जाता है। वे तिब्बती-बर्मी भाषा परिवार की 'कोचक्रो' बोली बोलते हैं तथा उनकी शारीरिक एवं आकृति विशेषताओं के आधार पर उन्हें मंगोलीय प्रजातीय समूह से संबंधित माना जाता है। राभा समुदाय पूर्णतः वनों पर निर्भर है, इसलिए उनकी अर्थव्यवस्था को वन-आधारित अर्थव्यवस्था कहा जाता है। वे सीमित मात्रा में वन भूमि के भीतर धान की खेती भी करते हैं। परंपरागत रूप से उनका समाज मातृवंशीय रहा है, किंतु विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारणों से वर्तमान में वे मातृवंशीयता और पितृवंशीयता के बीच संक्रमण की स्थिति में हैं। वन बस्तियों में उनका जीवन एवं संस्कृति अत्यंत सरल रही है तथा उनका व्यवहार भी सहज एवं सरल रहा है। किंतु समय के साथ अनेक कारकों के प्रभाव से उनकी मानवता, सामाजिक जीवन एवं व्यवहार में परिवर्तन होने लगा है। यह शोध-पत्र समय के साथ वन राभा समुदाय में आए मानवीय एवं व्यवहारगत परिवर्तनों का अध्ययन करने का प्रयास करता है। यह अध्ययन उन कारकों को भी उजागर करता है जो राभा समुदाय की मानवता एवं व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए उत्तरदायी रहे हैं। इसके अतिरिक्त, यह शोध लेख उन विकासात्मक हस्तक्षेपों पर भी प्रकाश डालता है जिन्होंने वन राभा समुदाय के जीवन में परिवर्तन लाया है। अलीपुरद्वार की वन बस्तियों में कोविड-*19* के बाद उत्पन्न मानवीय जीवन की चुनौतियों पर भी इस लेख में चर्चा की गई है। यह शोध-पत्र क्षेत्रीय (फील्ड) अध्ययन एवं गुणात्मक आँकड़ों पर आधारित है। शोध निष्कर्षों की पुष्टि के लिए कुछ केस स्टडी भी सम्मिलित की गई हैं। साथ ही, अध्ययन में द्वितीयक स्रोतों का भी उपयोग किया गया है।

कुंजी शब्दः - मानवता, व्यवहार परिवर्तन, वन राभा।

परिचयः

मानवता में मानव व्यवहार, जैव-विज्ञान, संस्कृति, समाज एवं भाषाएँ सम्मिलित होती हैं। यह एक सामाजिक विज्ञान है, जिसमें मानवीय व्यवहार से संबंधित समाज के सिद्धांतों को विकसित करने हेतु वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाता है। मानववैज्ञानिक यह अध्ययन करते हैं कि किस प्रकार मानव की सोचने की क्षमता और व्यवहार संस्कृति के द्वारा संरूपित होते हैं और यह विभिन्न समाजों में कैसे भिन्न-भिन्न होता है। मानविकी और मानवशास्त्र दोनों ही क्षेत्र एक-दूसरे के पूरक हैं। मानविकी मानवीय अनुभव को समझने और व्याख्या करने का संबल प्रदान करती है, जबकि समाज विज्ञान में, विशेषकर मानवशास्त्र में, मानवीय व्यवहार के कारण एवं परिणाम को समझने का संबल प्रदान करता है। व्यवहार परिवर्तन व्यक्ति की क्रियाओं, प्रवृत्तियों एवं आदतों को उन्नत करने के दृष्टिकोण से परिवर्तित करने की एक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति मानव समाज में अपनी उत्पादकता, क्षमता, गुण आदि को उन्नत कर सकता है।

व्यवहार परिवर्तन के लिए विभिन्न कारक उत्तरदायी होते हैं, जैसे समाज के लोगों के सुझाव, प्रशासन का कुशल प्रबंधन, सगे-संबंधी, व्यक्तिगत विकास जनित लक्ष्य एवं सरकारी प्रयास इत्यादि।

राभा जनजाति भारत के उत्तर-पूर्वी इलाके, विशेषकर असम एवं उत्तर बंगाल की एक स्थायी जनजाति है, जो जंगल एवं उनसे सटे गाँवों में निवास करती है। ये मुख्यतः जंगल पर ही आश्रित रहते हैं। राभा एक मंगोलॉयड प्रजाति है तथा इनकी भाषा "कोचक्रो" है, जो चीनी-तिब्बती-बर्मी भाषाई समूह के अंतर्गत आती है। इसके साथ-साथ ये लोग बांग्ला, हिन्दी तथा सादरी भाषा का भी प्रयोग करते हैं। राभा जंगल से जुड़ी हुई जनजाति है तथा इनकी हर क्रिया वनों पर आश्रित है। वे लकड़ी, ईंधन, चारा, कंद-मूल, फल-फूल सभी चीजें जंगलों से ही प्राप्त करते हैं। इसके अलावा शिकार संबंधी आदि सभी क्रियाकलाप जंगल से ही अर्जित करते हैं। सामाजिक स्वरूप की बात की जाए तो यह समाज मातृसत्तात्मक है, जिसमें अब धीरे-धीरे बदलाव आ रहा है। आज राभा जनजाति मातृसत्तात्मक से पितृसत्तात्मक की ओर अग्रसर हो रही है। राभा जनजाति मुख्य रूप से आठ उप-शाखाओं में बँटी हुई है, जिनमें प्रमुख हैं कोच राभा, पानी राभा, पाती राभा, माइतोरी राभा।

लक्ष्य एवं उद्देश्यः - अलीपुरद्वार के वनवासी राभा जनजाति की मानवता एवं व्यवहार परिवर्तन को जानना तथा उन कारकों को जानना, जिनसे इनके व्यवहार में परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं।

शोध प्रविधिः -

इस शोध कार्य हेतु पश्चिम बंगाल के उत्तर बंगाल क्षेत्र के अलीपुरद्वार जिले के कालचीनी प्रखण्ड स्थित दो वनग्रामों का चयन कर वहाँ के वनवासी राभा जनजाति के मध्य क्षेत्रकार्य किया गया है। क्षेत्रकार्य द्वारा प्राथमिक आँकड़े एकत्रित किए गए हैं। यह शोध कार्य गुणात्मक आँकड़ों पर निर्भर है। प्राथमिक आँकड़ों के एकत्रण हेतु साक्षात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली सह अनुसूची, फोटोग्राफी, जीवन इतिहास, केस स्टडी एवं वंशावली सारणी जैसी तकनीकों का प्रयोग किया गया है। केन्द्रित समूह साक्षात्कार भी किया गया है। आधारभूत आँकड़ों के लिए द्वितीयक आँकड़ों का एकत्रण भी पुस्तकालयों द्वारा किया गया है। अध्ययन की इकाई के रूप में राभा परिवारों का चयन किया गया है और सैंपल साइज के तौर पर दो वनग्रामों यथा कुदालवस्ती से 50 परिवारों एवं आण्डूवस्ती से 50 परिवारों का चयन कर अध्ययन किया गया है। सैंपल के चयन में उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्रः -

यह शोध कार्य शोधकर्ताओं के द्वारा पश्चिम बंगाल राज्य के उत्तर बंगाल के अलीपुरद्वार जिले के कालचीनी प्रखण्ड के राभा वनवस्तियों में किया गया है। उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन द्वारा दो वनवस्तियों का चयन अध्ययन हेतु किया गया है, यथा कुदालवस्ती एवं आण्डूवस्ती। ऐसे कुल 11 राभा वनवस्ती पूरे डुअर्स क्षेत्र में हैं। क्षेत्र को "डुअर्स" इसलिए कहा जाता है, क्योंकि इस क्षेत्र में भूटान में प्रवेश हेतु कुल 17 प्रवेश द्वार हैं। अतः इसी कारण से इस क्षेत्र को डुअर्स भी कहते हैं। डुअर्स क्षेत्र जैव-विविधताओं एवं नदियों-प्रवाहों से तथा जंगलों एवं पर्वतों से धनी है। यहाँ की वनवस्तियाँ वन विभाग/वन दफ्तर से नियंत्रित होती हैं। डुअर्स फौना और फ्लोरा में भी धनी है। विशेषकर इस क्षेत्र में जहाँ एक तरफ घने जंगल हैं, वहीं दूसरी तरफ चाय बगान भी भरे पड़े हैं।

परिणाम और चर्चाः -

राभा जनजाति सदियों से जंगलों में निवास करती आई है और जंगलों से इनका अन्योन्याश्रय संबंध है। इनकी

आजीविका, अर्थव्यवस्था एवं सामाजिक-धार्मिक जीवन सभी वनों के अंदर ही पूर्ण होता आया है। यह जनजाति प्रकृति-मानव-जीवात्मा संकुल को आत्मसात कर चुकी है। मातृवंशीय से पितृवंशीय मानवता एवं व्यवहारिक परिवर्तन विगत कुछ दशकों में हुआ है। जैसे-जैसे वनवासी राभा समाज डुअर्स के अन्य समुदायों के संपर्क में आया तथा पितृसत्तात्मक समाजों के परिणामस्वरूप इनके जीवन में भी पितृसत्तात्मकता के लक्षण विद्यमान होना प्रारम्भ हुआ। अब यह देखा जाता है कि मातृसत्तात्मकता के लक्षण क्षीण पड़ते जा रहे हैं। अब वनवासी राभा समाज अपनी पुत्रियों का विवाह दूसरे गाँवों में कर पुत्रियों को अन्य गाँवों में भेजना प्रारम्भ कर चुका है और अब पुत्रों को सम्पत्ति का भी हस्तान्तरण प्रारम्भ हुआ है। वंशनाम भी अब पिता से पुत्रों को प्राप्त होने लगा है, परंतु बहुत कम परिवार अब मातृवंशीय नियमों में चल रहे हैं। परसंस्कृतिग्रहण के कारण अब इनके विवाह संस्कारों में भी भौतिक संसाधनों का लेन-देन देखा जा रहा है। समाज के मातृसत्तात्मकता से पितृसत्तात्मकता की ओर अग्रसर होने के कारण इनके मानवीय मूल्यों में भी परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगा है। अब ये लोग पूँजी आधारित लेन-देन को प्राथमिकता देने लगे हैं, जबकि यह समाज समतामूलक था और पारस्परिक सहयोग के द्वारा ही इनका समाज चलता था, जो धीरे-धीरे क्षीण हो रहा है। धीरे-धीरे राभा समाज द्विरेखीय वंशक्रम से एकरेखीय वंशक्रम की ओर अग्रसर हो गया है।

राभा जनजाति में पिछले दो दशकों में जहाँ पारम्परिक रूप से अपने राभा समाज में ही विवाह प्रथा को मान्यता दी जाती थी एवं सगोत्र विवाह को वर्जित माना जाता था। कहा जाए तो समाज वैवाहिक संबंधों के मामलों में अंतर्विवाही नियमों का कड़ाई से पालन करता था, जैसा कि मातृवंशीय समाजों में हुआ करता था। परंतु विगत दो दशकों में इनके वैवाहिक संबंधों में परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए हैं। इनके जीवन की सरलता, सहजता, यूँ कहें तो इनकी उदार मानवता-प्रवृत्ति के कारण इनके व्यवहारों में परिवर्तन आया है, क्योंकि इनके वनग्रामों में राभा समाज अब दूसरे अन्य आदिवासी या गैर-जातीय समाजों या अन्य धर्मावलंबियों के साथ भी राभा के वैवाहिक संबंधों को सर्वसम्मति से स्वीकार करता है और अन्य धर्म के पुरुषों या अन्य जातियों या जनजातियों के पुरुषों को वनबस्ती में विवाह उपरांत मातृवंशीय नियमों के तहत वधु के साथ गाँव में ही घरजमाई के रूप में बसने को स्वीकार करता है। गाँव की पारम्परिक पंचायत द्वारा इनके वैवाहिक जीवन को स्वीकार करने के एवज में वनबस्ती हेतु वधु पक्ष द्वारा एक सामूहिक भोज माँगा जाता है, जिसके उपरांत निगोसा पक्ष (वधु पक्ष) एवं जोगजुकु पक्ष (वर पक्ष) गाँव में राजी-खुशी रहते हैं। मैंने अपने क्षेत्रकार्य में कुदालबस्ती वनग्राम में दो ऐसे केस पाए, जिसमें एक में एक मुस्लिम पुरुष घरजमाई के रूप में स्वीकार किए गए और एक में एक जनजाति के पुरुष घरजमाई के रूप में स्वीकार कर लिए गए हैं। इस प्रकार यह दर्शाता है कि वनवासी राभा समाज सहज एवं सरल मानवतावादी समाज है और इनके सामाजिक संगठनों एवं वैवाहिक व्यवहारों में परिवर्तन वनवस्तियों के हित हेतु आवश्यक रूप से देखे जाते हैं।

वनवासी राभा समाज दीर्घकाल तक प्रकृतिपूजक और जीवआत्मावादी रहे हैं, क्योंकि ये लोग वनग्रामों के अंदर सदियों से रहते आए हैं। लेकिन 1978 के बाद जब इनके गाँवों में ईसाई मिशनरियों का प्रवेश हुआ, तो धीरे-धीरे इनके धर्मांतरण के साथ इनकी मानवता एवं व्यवहारों में भी आमूलचूल परिवर्तन हुआ। वनवासी राभा समाज प्राचीन काल से ही प्रकृति पूजक एवं जीवात्मावादी होने के कारण कदम-कदम पर देवी-देवताओं, भूत-प्रेतों की पूजा एवं उपासना किया करते थे। किसी होनी या अनहोनी के लिए ये लोग प्रेतात्माओं को जिम्मेदार मानते थे। विशेषकर रूगटक बासेक, गोन्चा, देवाल, जुराकाल, बढ़ी तोरसा इत्यादि की पूजा हेतु इन्हें सुअर या बकरी या मुर्गा की बलि के साथ-साथ चोकोत चढ़ाना पड़ता था और गाँव के पुजारी "हुजी" एवं "श्रांगा" को खिलाना-पिलाना पड़ता था, जिसमें अत्यधिक व्यय होता था। इसमें यह समाज प्रायः गरीबी से जूझता रहा है। इसलिए ज्यों ही ईसाई धर्म इनके ग्रामों में प्रवेश किया, तो ये लोग अत्यधिक खर्च से बचने एवं जीवन स्तर को ऊँचा उठाने हेतु तुरंत अपने धार्मिक व्यवहारों में परिवर्तन लाते

हुए ईसाई धर्म को अंगीकृत करना प्रारम्भ करने लगे और धीरे-धीरे चर्च एवं मिशनरियों के प्रभाव में आकर ये लोग बचत की धारणा विकसित करने लगे तथा शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार के प्रति जागरूकता बढ़ी।

मैंने अपने क्षेत्रकार्य में पाया कि वनवासी राभा समाज बहुत जल्द और बड़ी सहजता से ईसाई धर्म को अपनाकर अपना जीवन स्तर सुधारने पर केन्द्रित हो जाते हैं। यह राभा समाज की सरल मानवता एवं सरल व्यवहार को दर्शाता है। हम कह सकते हैं कि वनवासी राभा में ईसाईकरण के कारण भी इनकी मानवता में परिवर्तन आए और यह आवश्यक रूप से वनवासी राभा के व्यवहारों में भी परिवर्तन लाया है। अंधविश्वासों को दूर करने में ईसाई धर्म ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। विकास योजनाओं एवं सरकारी प्रयासों का किसी समाज की मानवता एवं व्यवहारों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। वनवासी राभा समाज इससे अछूता नहीं है। अगर बात करें कि राभा समाज को पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा अनुसूचित जनजाति की सूची में चिह्नित कर रखने की बात आई, तो सरकार ने एक सर्वे अलीपुरद्वार के डुअर्स की वनवस्तियों एवं जलपाईगुड़ी एवं कोचबिहार जिले की वनवस्तियों में कराया और अपने सर्वे में उन्हीं राभा परिवारों को "राभा" के रूप में चिह्नित कर अनुसूचित जनजाति की सूची में रखना प्रारम्भ किया, जो अपने नाम के उपनाम में "राभा" लिखते थे या कहलाते थे। परंतु इस कारण राभा वनवस्तियों में राभा समाज के मध्य एक विकट समस्या उत्पन्न हुई और इसका कारण था कि अधिकांश राभा परिवार अपने नाम के साथ "कोच" लिखते या कहलाते थे। सरकार ने उन्हें अनुसूचित मानने से इंकार कर दिया। जबकि डुअर्स के राभा वास्तविक रूप से कोच राभा हैं। कोच राभा समाज की एक उपशाखा है, जो विशेषकर उत्तर बंगाल में निवासरत है। "कोच" कोई अलग जनजाति समुदाय नहीं है। इनकी भाषा, धर्म, अर्थव्यवस्था और सामाजिक संगठन समान हैं। परंतु सरकार की भ्रांति के कारण अधिकांश राभा आरक्षण एवं अन्य अधिकारों से वंचित होने लगे। ऐसी स्थिति के उत्पन्न होते ही वनवासी राभा समाज की मानवता के स्वभाव तथा उनके व्यवहारों में परिवर्तन आना प्रारम्भ हुआ। इस वाकया के बाद वनवासी राभा अपने को कोच के बजाय राभा कहलवाने या लिखवाने पर जोर देने लगे। अधिकांश राभा एकजुट होकर राभा विकास समिति का गठन करने लगे तथा राभा की अस्मिता की रक्षा के लिए उग्र आंदोलन प्रारम्भ किया, ताकि यह भ्रांति दूर की जा सके।

राभा विकास समिति के सदस्य वनवस्तियों में घूमकर राभा को जागरूक करना प्रारम्भ करने लगे तथा अपने पारम्परिक रीति-रिवाजों यथा रुग्दूक-बासेक पूजा, चार खैलायनी नृत्य, नाकचेंगरेनी, केड़की-जेड़की प्रयोग आदि के पुनर्चलन पर बल देने लगे। इन पुनर्जीवन और पुनर्जनजातीयकरण की प्रक्रियाओं के कारण जोरदार तरीके से राभा के हर वर्ग, बूढ़े, युवा, बच्चे, महिलाओं सभी के व्यवहारों में परिवर्तन हुआ है और वे पहले से मुखरित हुए हैं तथा अपने अधिकारों के प्रति भी सचेत हुए हैं। जहाँ पहले राभा बाहरी लोगों से दूर रहते थे तथा बहुत ही शांतिप्रिय एवं शर्मीले स्वभाव के थे, अब इन प्रयासों के फलस्वरूप इन लोगों की मानवता के स्वरूप तथा व्यवहारों में एक संतुलित परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है, जो कि समय की माँग भी है। ब्रिटिश काल से ही जब वन बस्तियों का प्रशासन ब्रिटिश के अधीन रहा, तब से स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अभी तक वन विभाग ही वन बस्तियों के लोगों के निवास का प्रशासन देखता है और वनों के अंदर वन कटाई, रास्ता निर्माण, लकड़ी ढुलाई इत्यादि कार्यों हेतु राभा परिवारों के पुरुषों को मजदूर के रूप में बहाल किया जाता रहा है और उन्हें इन कार्यों हेतु महीने में मजदूरी प्रदान की जाती है।

इस प्रकार की व्यवस्था के कारण राभा समाज की मातृवंशीयता के नियम भी बदलते जा रहे हैं और समाज में पितृसत्तात्मकता के लक्षण परिणत हो रहे हैं, क्योंकि वन विभाग के नियम के मुताबिक वन दफ्तर में मजदूर के रूप में लेबर कार्ड जब भी हस्तान्तरित होंगे, तो पिता से पुत्र को होंगे। जबकि वनबस्ती में पारम्परिक तौर पर सदियों के मातृवंशीय नियम के कारण पुरुष घरजमाई के रूप में दूसरे गाँवों से आते रहे हैं, जो लेबर कार्ड हेतु कानूनी उत्तराधिकारी नहीं हो सकते थे। अतः इसके समाधान हेतु धीरे-धीरे समाज पितृसत्तात्मकता की ओर अग्रसर हो रहा है, ताकि पुरुषों

से उसके पुत्र को कानूनी उत्तराधिकारी के तौर पर वन श्रमिक प्राप्त होता रहे। इस तरह इन व्यवस्थाओं से राभा समाज की मानवता, मानवीय मूल्य एवं व्यवस्था आवश्यकता के अनुरूप परिवर्तित हो रहे हैं। वन विभागों के कुछ अन्य क्रियाकलापों की बात करें तो हमने देखा कि राभा वनग्रामों में राभा परिवारों और वन विभागों के प्रशासन के मध्य अमूमन एक संघर्ष की स्थिति देखने को मिलती है, क्योंकि वन विभाग इन दिनों सभी राभा परिवारों को समान अवसर नहीं देता है। इतना ही नहीं, लाभुकों को वन में काम देना हो या फिर किसी योजना के तहत राशि या सामग्री वितरित करनी हो, तो सभी को यह प्राप्त नहीं होता। कुछ ही परिवारों को लाभ देकर बाकी को वंचित कर दिया जाने लगा है। साथ ही वनों पर इनका जो पारम्परिक अधिकार रहा है, जैसे वनों में घूमना, चारा या लघु वन उत्पाद संकलन, जलावन संकलन या घरों के निर्माण हेतु लकड़ियों का संकलन आदि पर भी कड़ा प्रतिबंध लगा दिया गया है। इन कारणों से वनवासी राभा अब वन विभाग एवं वन मंत्रालय से संघर्ष करते दिखते हैं, जो कि इनकी प्रकृति के विपरीत रहा है। यहाँ तक कि वनों में इनके ऊपर झूठे केस बनाकर वन कानूनों के उल्लंघन का दोषी बनाते हुए कई परिवारों को वन विभाग ने जेलबंदी भी किया है। इसी कारण से राभा समाज ने अपने वन अधिकारों के रक्षार्थ, अपने जल, जंगल, जमीन के रक्षार्थ एक बड़ा मंच तैयार किया है, जिसका नाम है "उत्तर बंग वन श्रमजीवी मंच", जो वनवासी राभा के अधिकारों की रक्षा हेतु राज्य सरकार से लेकर हाईकोर्ट, सुप्रीम कोर्ट तक आवाज पहुँचाता है। हाल ही में कुदाल बस्ती में वन विभाग वन कानून के नियमों के विरुद्ध एक फर्जी वन संरक्षण समिति बनाकर प्रस्ताव पास कर रहा था, जिसका ग्रामीणों ने उत्तर बंग वन श्रमजीवी मंच के माध्यम से विरोध किया। तब एक वैधानिक वन संरक्षण समिति बन पाई। इस तरह समस्त डुअर्स की राभा वनवस्तियों में ही वन अधिकारों की रक्षा हेतु सरल-सहज राभा समाज की मानवता एवं व्यवहारों में आमूलचूल परिवर्तन आए हैं। इनके अलावा कुछ अन्य सरकारी विकास योजनाएँ हैं, जो राभा समाज के मानवीय मूल्यों और व्यवहारों में परिवर्तन ला रही हैं, विशेषकर युवाओं, महिलाओं एवं बच्चों में। इनमें प्रमुख हैंः- स्वयं सहायता समूह का निर्माण, आंगनबाड़ी केन्द्र, पारम्परिक वस्त्र केमलेट बुनने तथा मार्केटिंग का प्रशिक्षण, आभार बाड़ी और बोनो छाया शौचालय का निर्माण। इनके अतिरिक्त इन दिनों पंचायती राज के चुनाव तथा उसमें महिलाओं की बढ़ती भागीदारी ने भी राभा समाज की महिलाओं की भूमिका तथा सोच में व्यापक बदलाव लाया है। कुदाल बस्ती ग्राम में वर्तमान में रेखा राभा एक महिला वार्ड सदस्य निर्वाचित हुई हैं। इससे राभा महिलाओं के व्यवहारों में भी परिवर्तन हो रहा है।

अलीपुरद्वार का पूरा क्षेत्र पर्यटन का एक केन्द्र है। यहाँ के वनों में कई वन्य जीव अभयारण्य पाए जाते हैं, जिसमें जालदापाड़ा वन्य जीव अभयारण्य एक सींग वाले गैंडे तथा हाथियों के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ प्रतिवर्ष पर्यटकों का हुजूम लगता है। यह क्षेत्र राभा का निवास स्थल भी है। अतः वनवासी राभा समाज प्रतिवर्ष पर्यटकों से रूबरू होता है, जिसके फलस्वरूप राभा समाज के वस्त्र, आभूषण, भोजन, रहन-सहन, प्रवृत्ति आदि में भी परिवर्तन धीरे-धीरे दृष्टिगोचर हो रहे हैं। प्रतिवर्ष अक्टूबर माह से फरवरी माह तक पर्यटकों का आना-जाना लगा रहने के कारण वनग्रामों में राभा युवकों को रोजगार भी प्राप्त होता है। वे लोग वनग्रामों में अपनी भूमि पर पर्यटकों के ठहरने के लिए गेस्ट हाउस (ब्लू होम स्टे) बनाते हैं। पर्यटक उसे ऑनलाइन या मोबाइल द्वारा बुक कर वहाँ पहुँचते हैं और जंगलों में ठहरने का लुत्फ उठाते हैं। इस प्रकार ब्लू होम स्टे एवं रेस्टोरेंट द्वारा स्थानीय राभा युवक अच्छा-खासा पैसा कमाते हैं। साथ ही राभा युवतियाँ एवं वृद्धजन अपने पारम्परिक पोशाक एवं वाद्य यंत्रों को लेकर पर्यटकों के ठहराव के स्थल पर अपना पारम्परिक लोक नृत्य यथा नोकचेंग रेनी दिखाकर भी आमदनी करते हैं। पर्यटकों के साथ विभिन्न भाषाओं में वार्तालाप करने के कारण इनकी शारीरिक भाषा एवं प्रवृत्ति में भी परिवर्तन हो रहा है। इस प्रकार पर्यटन के माध्यम से भी राभा समाज के लोगों में व्यवहारिक परिवर्तन आवश्यक रूप से हो रहे हैं।

कोविड-19 के उत्तरार्द्ध वनवासी राभा समाज के मानवीय संबंधों एवं उनके व्यवहारों में पुनः परिवर्तन हुआ है। कोविड-19 के बाद राभा समाज अपनी आजीविका के लिए बाहरी एन.जी.ओ. एवं सरकार की मुफ्त राशन योजना पर अत्यधिक निर्भरशील हुए हैं। सामाजिक दूरी के विपरीत वैयक्तिक पारस्परिक संबंधों के कारण राभा समाज में एक-दूसरे परिवारों को समय पर मदद एवं पारस्परिक सहयोग करते देखा गया है, क्योंकि कोविड-19 के दौरान वनवस्तियों में इनके बीच आपसी सहयोग से ही ये लोग आजीविका जुटा पा रहे थे। लॉकडाउन एवं प्रतिबंध का सबसे बुरा असर इनकी अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा था, क्योंकि वन विभाग द्वारा इनके जंगलों पर विचरण एवं किसी प्रकार की सामग्री एकत्रण पर पूर्णतः प्रतिबंध कर दिया गया था तथा दूसरी ओर साप्ताहिक बाजार/हाट बंद हो जाने से ये लोग अपनी सामग्रियों को बेच पाने में भी असमर्थ हो गए थे। परन्तु इनकी परोपकारिता, अनुकूलनता एवं पारम्परिक सहयोगिता ने इनको इस विकट परिस्थिति से उबरने में सहायता प्रदान की। यही राभा की वास्तविक मानवता को प्रदर्शित करता है। कोविड-19 के बाद इनके वनग्रामों से युवकों का प्रवासन अन्य औद्योगिक केन्द्रों की ओर होना प्रारम्भ हुआ है। वनवस्तियों में बेरोजगारी के कारण राभा युवक गुवाहाटी, कोलकाता, गोवा, पंजाब एवं बैंगलोर की ओर पलायन कर गए हैं। वहीं वे होटलों या अन्य फैक्टरियों में कार्य करते हैं तथा प्रतिवर्ष क्रिसमस के समय एवं मार्च-अप्रैल में गाँव लौट जाते हैं। आण्डूबस्ती से वर्ष 2022 में 12 राभा युवक दिल्ली, गुवाहाटी, पुणे एवं कोलकाता काम के लिए गए थे। युवकों के बाहरी केन्द्रों में प्रवासन करने से भी राभा के मध्य उनके व्यवहारों में भौतिकतावादी प्रवृत्ति एवं भविष्य के लिए पैसा बचाने जैसी प्रवृत्तियों की बढ़ोतरी हुई है। यह भी उनके व्यवहार में परिवर्तन को दर्शाता है। कोविड के दौरान इन्होंने जो अराजकता एवं भूखमरी की स्थिति को अनुभव किया, उससे सीख लेते हुए ये लोग भविष्य के लिए पूँजी बचाने पर ध्यान केन्द्रित करने लगे हैं, जो कि अच्छा संकेत है।

निष्कर्षः -

निष्कर्ष के तौर पर हम कह सकते हैं कि बोडो समूह के डुअर्स निवासी राभा समाज परम्परा और परिवर्तन का एक सशक्त सम्मिश्रण प्रदर्शित करता है। आधुनिकता व तकनीक ने आज उनके पुराने व्यवहारों को प्रभावित किया है और साथ ही अनुकूलन और नवाचार के द्वार उनके मध्य खोल दिए हैं। राभा जनजाति के बीच मानवता का सार उनकी अनुकूलशीलता, सामुदायिक बंधनों की ताकत और पुराने और नए के बीच सामंजस्य बिठाने के सचेत प्रयास में निहित है। राभा जनजाति की विभिन्न संक्रमण स्थितियों का अध्ययन न केवल राभा के व्यवहारों में हो रहे परिवर्तनों के प्रति हमारी समझ को बढ़ाता है, साथ ही सांस्कृतिक संरक्षण एवं सतत विकास पर भी हमें बहुमूल्य सीख देता है।

संदर्भ सूची

1. मुखर्जी, रवीन्द्र नाथ (1969), सामाजिक मानवशास्त्र की रूपरेखा, जवाहर नगर, दिल्ली: विवेक प्रकाशन।
2. झा, प्रफुल्ल रंजन (2007), सामाजिक मानवशास्त्र, दिल्ली: पीयूष पब्लिकेशन्स।
3. भौमिक, पी0के0 (2006), जनजाति एवं सतत विकास, दिल्ली: कल्पान पब्लिकेशन्स।
4. माथुर, एच0एम0 (1976), जनजातीय क्षेत्रों में विकास प्रशासन, दिल्ली: क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी।
5. सिंह, बी0जी0 (1995), बस्तर जनजातियों का विकास, नई दिल्ली: क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी।